मुख्य परीक्षा

प्रश्न–1.''गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग इसलिए नहीं माना जाता है कि इस काल में भारत का भौगोलिक एवं राजनीतिक विस्तार सर्वाधिक था, बल्कि कला की विविध विधाओं में अभूतपूर्व प्रगति हुई।'' उपरोक्त कथन से आप कहाँ तक सहमत है? (15 अंक, 250 शब्द)

"Gupta age is not considered as the golden period because India's territorial and political expansion in this period was more but unprecedent progress in various techniques in art." Till what extent you agree with the statement? (15 marks,250 Words)

मॉडल उत्तर

उत्तर– भूमिका

- गुप्तकाल में भारत का भौगोलिक एवं राजनीतिक विस्तार के साथ-साथ कला की विविध विधाओं जैसे वास्तुकला, स्थापत्य कला, चित्रकला, मृदभाण्डकला आदि के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई।

मुख्य विषय वस्तु

भूमिका से लिंक रखते हुए गुप्तकालीन कलात्मक विशेषताओं की संक्षिप्त चर्चा कीजिए जिनमें आप निम्न बिंदुओं को शामिल कर सकते हैं–

- गुप्तकालीन कला में प्राकृतिक, भौतिक एवं सांस्कृतिक पहलू शामिल हुए तथा तत्कालीन विश्वासों एवं मान्यताओं के अनुरूप ही मंदिर, स्तूप, चित्र आदि निर्मित हुए। तिगवा का विष्णु मंदिर प्रारंभिक शैली का सर्वोत्तम उदाहरण है, वहीं सांची का मंदिर बौद्ध शैली के प्रभाव में है। उत्तरकालीन गुप्तकाल के मंदिर ईंट से बने तथा सहायक देवताओं की मूर्तियाँ रखे जाने से पंचायतन योजना का अविर्भाव हुआ।
- बौद्ध स्तूपों तथा बौद्ध गुहामंदिर भी इस काल के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। अजन्ता तबा बांध पहाड़ी में खोदी गई गुफाओं में अजन्ता की गुफा संख्या 16, 17 तथा 19 गुप्तकाल भी है।
- मूर्तिकला व मृणमूर्तिकला की भी प्रगति हुई तथा चित्रकला ने कलात्मक सौन्दर्य तकनीक में ऊँचे प्रतिमान स्थापित कर लोकप्रियता प्राप्त की। वात्स्यायन के कामसूत्र में चित्रकला की गणना चौसठ कलाओं में की गई तथा गुफा चित्र भी उत्कृष्ट हैं। धार्मिक व लौकिक जीवन से संबंधित तथा कुछ चित्र धर्मनिरपेक्ष भी है जैसे-नृत्यगान, शोकाकुल युवतियां, भव्य राजकीय जुलूस आदि।

अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।

मुख्य परीक्षा

प्रश्न–2.सहिष्णुता की भावना वर्तमान में ही नहीं, बल्कि अतिप्राचीन समय से ही भारतीय समाज की एक महत्वपूर्ण अभिलक्षण रही है। स्पष्ट करें। **(10 अंक, 150 शब्द)**

Sense of tolerance is not only the feature of Indian Society in the present times but exists from the ancient times. Explain.
(10marks, 150 Words)

मॉडल उत्तर

उत्तर– भूमिका

- सहिष्णुता एवं प्रेम की भावना भारतीय संस्कृति की विशिष्ट पहचान रही है। वर्तमान में ही नहीं, बल्कि सहिष्णुता अतिप्राचीन समय से ही भारतीय समाज की महत्वपूर्ण अभिलक्षण रही है।

मुख्य विषय वस्तु

- भारतीय संस्कृति की सर्वधर्मसम्भाव और सहअस्तित्व की भावना ही इसे अन्य संस्कृतियों से विशिष्ट बनाती है। प्राचीन भारत में हमें धार्मिक समूहों के बीच हिंसा अथवा दंगों का एक भी उदाहरण नहीं मिलता। 'हम एक हैं' की भावना और साझी संस्कृति ही भारतीय संस्कृति व राष्ट्र का बल है।
- प्राचीन भारत में सम्राटों द्वारा विभिन्न धर्मों को संरक्षण दिया गया। मौर्य, पल्लव तथा चालुक्य आदि विभिन्न राजवंशों ने विभिन्न धार्मिक पंथों को एक साथ संरक्षण दिया। अशोक की सहिष्णुता विदित है जिसकी जड़े भारतीय संस्कृति में समाहित है।
- विदेशी मूल के होने के बाद भी अकबर इस तथ्य को समझ चुका था कि भारत पर सफल शासन मूलभूत सांस्कृतिक मूल्यों जिनमें सहिष्णुता मुख्य है, को अपनाकर ही किया जा सकता है। अशोक के धम्म से लेकर अकबर की सुलह–ए–कुल नीति के केन्द्र में सहिष्णुता ही है। मध्यकालीन सूफीयों के संदेश में भी सहिष्णुभाव ही अंतर्निहीत थे।
- गांधीजी भी सत्याग्रह व अहिंसात्मक संघर्ष, जो राष्ट्रीय आंदोलन की प्रेरणा थी कि केन्द्र में भी सहिष्णुता ही था।

अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।

मुख्य परीक्षा

प्रश्न-3.''छठी शताब्दी ई.पू. में हुए क्रांतिकारी परिवर्तनों से उपजी नई भौतिक संस्कृति को द्वितीय नगरीकरण की संज्ञा दी गई है।'' आप इस कथन से कितना सहमत है?(15 अंक, 250 शब्द)

The new materialistic culture which evolved from the revolutionary changes in (6th century BC) is entitled as the second urbanization. Till what extent you agree with the statement. **(15 marks,250 Words)**

मॉडल उत्तर

उत्तर- भूमिका

- छठी शताब्दी ई.पू. में समाज, अर्थव्यवस्था तथा राजनीति में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए जिसे कृषि, शिल्प तथा व्यापार के विस्तार ने आधार दिया। इन तमाम परिवर्तनों ने भौतिक संस्कृति के उद्भव को संभव बनाया जिसने लोगों के जीवन स्तर को उन्नत बनाकर एक नये समाज की स्थापना कर दी थी।

मुख्य विषय वस्तु

- उत्तर वैदिक काल में जनपद का विकास हुआ तथा राज्य की कल्पना भौगोलिक आधार पर होने लगी जो आगे छोटे-छोटे जनपदों के समावेश से महाजनपदों के सृजन का आधार बनें।
- लोहे के उपयोग से आर्थिक क्षेत्र में दूरगामी परिवर्तन हुए, कृषि योग्य भूमि का विस्तार, गहरी जुताई से अधिशेष उत्पादन हुआ जो अन्य गतिविधियों शिल्प, व्यापार को बढ़ावा मिला जिससे नगरीकरण के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ।
- अधिशेष उत्पादन से समाज का एक बड़ा वर्ग आजीविका संकट से मुक्त होकर शिल्पी गतिविधियों से जुड़ा और शहरों के आस-पास इनका निवास शहरी संस्कृति के विकास में विशेष भूमिका अदा की।
- पहिये पर लोहे के परत चढ़ाए जाने से यातायात के साधनों में तीव्रता अनेक उत्पादों की उपलब्धता ने भौतिकवाद को बढ़ावा दिया। समाज के समृद्ध लोग सुविधा और आय में बढ़ोतरी से प्रेरित होकर शहरों में निवास करने लगे। प्रारंभ में ये शहर अर्थव्यवस्था के केन्द्र थे, जो कालान्तर में राजनीति सत्ता के केन्द्र बने।
- मध्यवर्ग (कृषक, शिल्पी, व्यापारी) ने नवीन वैकल्पिक धर्मों को सहयोग दिया तथा ब्राह्मणवादी वर्चस्व को चुनौती मिली।

अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।

मुख्य परीक्षा

प्रश्न–4.भारतीय इतिहास में एलोरा सांस्कृतिक समन्वय की उत्कृष्ट धरोहर है। प्रकाश डालिये।

(10 अंक, 150 शब्द)

Throw light on that, Ellora is an excellent Heritage of evolutionary cultural co-ordination in Indian history. **(10 marks, 150 Words)**

मॉडल उत्तर

उत्तर– भूमिका

- एलोरा की गुफाएं महाराष्ट्र के औरंगाबाद के उत्तर में 26 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है जो बौद्ध धर्म, जैनधर्म और हिंदुत्व से प्रभावित हैं।

मुख्य विषय वस्तु

- एलोरा की गुफाएं भी भित्ति चित्र और उत्कृष्ट शिल्पकला का उदाहरण है जो मानवीय इतिहास में कला के उत्कृष्ट ज्ञान और अनमोल समय को दर्शाती है। राष्ट्रकूट वंश के शासकों द्वारा निर्मित ये गुफाएं शांति एवं अध्यात्म को प्रतिबिंबित करते हैं, साथ ही दैवीय ऊर्जा और शक्ति से भरपूर हैं।
- एलोरा की गुफाएं मठ, मंदिर आदि महान शिल्पकला से प्रभावित एवं गुफा पच्चीकारी दर्शाती है। एक रेखा में व्यवस्थित 34 गुफाओं में बौद्ध चैत्य या पूजाकक्ष, विहार, हिंदू और जैन मंदिर हैं जो इन तीनों धर्मों की जानकारी तथा प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक समन्वय का विलक्षण उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।
- पहाड़ तराशकर विपुल श्रमसाध्य और धैर्यपरक कार्य एलोरा के महान कलाकारों द्वारा किया गया, जहाँ भारतीय सांस्कृतिक कलात्मक परंपरा संरक्षित है और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित व सांस्कृतिक, धार्मिक सहिष्णुता का संदेश देती रहेंगी। ये गुफांए सदियों से हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्म के प्रति समर्पित है, जो प्राचीन भारत की धार्मिक सहनशीलता व सहिष्णुता को दिखाती है।

अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।